IJAER/March-April-2022/Volume-11/Issue-2 ISSN: 2278-9677
International Journal of Arts & Education Research

दक्षिण एशिया में इस्लाम और मुगल साम्राज्य: 1526-1857

डॉ. मनोज कुमार सिनसिनवार

सहायक आचार्य - इतिहास

महारानी श्री जया राजकीय महाविद्यालय भरतपुर (राज .)

सार

मुगल साम्राज्य, जो 1526 से 1857 तक फैला था, दक्षिण एशियाई इतिहास में एक महत्वपूर्ण अवधि थी, जिसे सबसे प्रभावशाली इस्लामी साम्राज्यों में से एक की स्थापना के रूप में चिह्नित किया गया था। तैमूर और चंगेज खान के वंशज बाबर द्वारा स्थापित, मुगल साम्राज्य ने फारसी संस्कृति को भारतीय परंपराओं के समृद्ध ताने-बाने के साथ एकीकृत किया, जिसने क्षेत्र के सामाजिक-राजनीतिक और सांस्कृतिक परिदृश्य को महत्वपूर्ण रूप से आकार दिया। इस्लाम ने शासन, वास्तुकला, कला और समाज को प्रभावित करते हुए साम्राज्य में एक केंद्रीय भूमिका निभाई। मुगल शासकों, विशेष रूप से अकबर ने धार्मिक सहिष्णुता और एकीकरण की नीतियों को बढ़ावा दिया, जिससे एक अद्वितीय समन्वयवाद को बढ़ावा मिला। इस युग में कला और विज्ञान का उत्कर्ष हुआ, एक परिष्कृत प्रशासनिक प्रणाली का विकास हुआ और महत्वपूर्ण आर्थिक विकास हुआ। मुगल साम्राज्य की विरासत दक्षिण एशिया की सांस्कृतिक और ऐतिहासिक चेतना में बनी हुई है, भले ही 19 वीं शताब्दी के मध्य में ब्रिटिश औपनिवेशिक शासन द्वारा इसका अंतिम पतन और विस्थापन हुआ हो।

मुख्य शब्द: *दक्षिण एशिया, मुगल साम्राज्य, 1526-1857*

परिचय

1526 से 1857 तक शासन करने वाला मुगल साम्राज्य दक्षिण एशियाई इतिहास में एक निर्णायक युग का प्रतिनिधित्व करता है। पानीपत की लड़ाई में अपनी जीत के बाद बाबर द्वारा स्थापित, साम्राज्य ने इस्लामी परंपराओं को भारतीय उपमहाद्वीप की विविध सांस्कृतिक प्रथाओं के साथ मिला दिया। मुगल शासन के तहत संस्कृतियों के इस संश्लेषण ने कला, वास्तुकला, साहित्य और शासन में उल्लेखनीय प्रगति की, जिसने क्षेत्र की विरासत पर एक अमिट छाप छोड़ी। मुगलों द्वारा इस्लाम की शुरुआत ने न केवल धार्मिक प्रथाओं को प्रभावित किया, बल्कि कानूनी ढांचे से लेकर शैक्षिक प्रणालियों तक दैनिक जीवन के विभिन्न पहलुओं को भी प्रभावित किया। मुगल शासकों, विशेष रूप से अकबर ने धार्मिक सहिष्णुता पर जोर दिया और अपनी मुस्लिम पहचान को मुख्य रूप से हिंदू आबादी के साथ एकीकृत करने का प्रयास किया, जिससे सापेक्ष सद्भाव और सांस्कृतिक संलयन का एक अनूठा युग शुरू हुआ। जैसे-जैसे साम्राज्य का विस्तार हुआ, इसका प्रशासन अधिक परिष्कृत होता गया, जिसमें एक केंद्रीकृत नौकरशाही प्रणाली का उपयोग किया गया, जिसने सापेक्ष दक्षता के साथ विशाल क्षेत्रों का प्रबंधन किया। मुगल काल अपने वास्तुशिल्प चमत्कारों, जैसे ताज महल और लाल किला के लिए भी प्रसिद्ध है, जो साम्राज्य की भव्यता और फारसी, इस्लामी और भारतीय स्थापत्य शैलियों के संगम के प्रमाण के रूप में खड़े हैं। आंतरिक संघर्ष और बाहरी दबावों के कारण अंततः इसके पतन के बावजूद, जो 1857 में ब्रिटिश औपनिवेशिक प्रभुत्व में परिणत हुआ, मुगल साम्राज्य की विरासत समकालीन दक्षिण एशियाई संस्कृति, धर्म और राजनीति को प्रभावित करती रही है। इस्लामी और दक्षिण एशियाई परंपराओं का साम्राज्य का जटिल मिश्रण क्षेत्र की ऐतिहासिक कथा और सांस्कृतिक पहचान का एक महत्वपूर्ण हिस्सा बना हुआ है। मुगल साम्राज्य की नींव मध्य एशियाई शासक बाबर ने रखी थी, जो प्रसिद्ध विजेता तैमूर और चंगेज खान का वंशज था।[1]

1526 में भारत में उनके शुरुआती अभियान के परिणामस्वरूप पानीपत की लड़ाई में निर्णायक जीत मिली, जिसने उपमहाद्वीप में मुगल शासन की शुरुआत को चिह्नित किया। बाबर के उत्तराधिकारियों, विशेष रूप से हुमायूँ और अकबर ने साम्राज्य को मजबूत और विस्तारित किया, एक राजवंश की स्थापना की जो तीन शताब्दियों से अधिक समय तक शासन करेगा। अकबर महान (1542-1605), यकीनन सबसे शानदार मुगल सम्राट, अपने प्रशासनिक सुधारों और अपने विविध विषयों के बीच एकता को बढ़ावा देने के प्रयासों के लिए प्रसिद्ध है। सुलह-ए-कुल (सार्वभौमिक सहिष्णुता) की उनकी नीति ने विभिन्न धार्मिक और जातीय समुदायों को समायोजित करके एक समावेशी साम्राज्य बनाने की कोशिश की। अकबर का दरबार विचारों का एक पिघलने वाला बर्तन बन गया, जहाँ विभिन्न पृष्ठभूमि के विद्वान, कलाकार और दार्शनिक सहयोग करते थे, जिससे एक समृद्ध सांस्कृतिक पुनर्जागरण हुआ।

अकबर के अधीन मुगल साम्राज्य और बाद में जहाँगीर और शाहजहाँ जैसे शासकों के अधीन, अद्वितीय स्थापत्य उपलब्धियाँ देखी गईं। अपनी पत्नी मुमताज महल की याद में शाहजहाँ द्वारा बनवाया गया मकबरा ताजमहल मुगल वास्तुकला के शिखर का प्रतीक है। इस युग में मुगल चित्रकला शैली का विकास भी हुआ, जिसने स्थानीय भारतीय शैलियों के साथ फ़ारसी कलात्मक तत्वों को मिश्रित किया, जिससे दरबारी जीवन, पौराणिक कथाओं और ऐतिहासिक घटनाओं को दर्शाने वाले उत्कृष्ट लघुचित्र तैयार हुए। आर्थिक रूप से, मुगल साम्राज्य अपने चरम पर दुनिया के सबसे धनी और सबसे अधिक उत्पादक क्षेत्रों में से एक था। अकबर के वित्त मंत्री टोडरमल द्वारा तैयार की गई कुशल राजस्व प्रणाली के तहत साम्राज्य की कृषि अर्थव्यवस्था फली-फूली। व्यापार फला-फूला, भारत कपड़ा, मसाले और अन्य वस्तुओं का एक महत्वपूर्ण निर्यातक बन गया। मुगल युग की स्थिरता और समृद्धि ने दुनिया भर के व्यापारियों और व्यापारियों को आकर्षित किया, जिससे क्षेत्र की सांस्कृतिक और आर्थिक ताने-बाने को और समृद्ध किया गया।[2]

हालांकि, मुगल साम्राज्य को भी महत्वपूर्ण चुनौतियों का सामना करना पड़ा। औरंगजेब जैसे बाद के सम्राटों ने अधिक रूढ़िवादी नीतियों को अपनाया, जिससे धार्मिक और राजनीतिक संघर्ष हुआ। औरंगजेब के शासनकाल (1658-1707) ने साम्राज्य के क्षेत्रीय शिखर को चिह्नित किया, लेकिन इसके पतन के बीज भी बोए। उनकी नीतियों ने कई गैर-मुस्लिम विषयों और क्षेत्रीय शासकों को अलग-थलग कर दिया, जिससे विद्रोह और साम्राज्य का विखंडन हुआ। 18वीं शताब्दी तक, मुगल साम्राज्य की शक्ति कम हो गई, आंतरिक मतभेदों, प्रशासनिक अक्षमताओं और मराठों और सिखों जैसी क्षेत्रीय शक्तियों के उदय से कमजोर हो गई। यूरोपीय औपनिवेशिक शक्तियों, विशेष रूप से ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कंपनी के आगमन ने मुगल अधिकार को और कम कर दिया। 1857 के विद्रोह, जिसे भारतीय विद्रोह के रूप में भी जाना जाता है, ने मुगल साम्राज्य के निश्चित अंत को चिह्नित किया, क्योंकि ब्रिटिश क्राउन ने भारत पर सीधा नियंत्रण कर लिया, जिससे ब्रिटिश राज की स्थापना हुई। अपने अंतिम पतन के बावजूद, दक्षिण एशियाई संस्कृति, वास्तुकला और इतिहास में मुगल साम्राज्य का योगदान अत्यंत प्रभावशाली रहा। मुगल काल को इसकी कलात्मक और स्थापत्य विरासत, नई कृषि पद्धतियों की शुरूआत और इस्लामी और भारतीय तत्वों को मिश्रित करने वाली मिश्रित संस्कृति को बढ़ावा देने के लिए मनाया जाता है। मुगलों की विरासत दक्षिण एशिया में गर्व और पहचान का स्रोत बनी हुई है, जो विजय, सांस्कृतिक संलयन और नवाचार के जटिल इतिहास को दर्शाती है। मुगल साम्राज्य का प्रभाव इसकी राजनीतिक और क्षेत्रीय उपलब्धियों से कहीं आगे तक फैला हुआ है।[3] दक्षिण एशिया के सांस्कृतिक, सामाजिक और बौद्धिक परिदृश्य पर इसका गहरा प्रभाव इस भव्य साम्राज्य की स्थायी विरासत का प्रमाण है।

सांस्कृतिक और कलात्मक योगदान

मुगल कला के महान संरक्षक थे, उन्होंने एक जीवंत सांस्कृतिक वातावरण को बढ़ावा दिया जिससे साहित्य, संगीत और दृश्य कलाओं का उत्कर्ष हुआ। मुगल साहित्य, विशेष रूप से फ़ारसी कविता और गद्य, शाही संरक्षण में फला-

फूला। अकबर, जहाँगीर और शाहजहाँ जैसे सम्राट न केवल संरक्षक थे, बल्कि कला और साहित्य के पारखी भी थे। मुगल दरबार ने इस्लामी दुनिया भर से कवियों, विद्वानों और कलाकारों को आकर्षित किया, जिससे एक समृद्ध, महानगरीय सांस्कृतिक वातावरण का निर्माण हुआ। मुगल वास्तुकला साम्राज्य की सबसे दृश्यमान विरासतों में से एक है। मुगलों के तहत विकसित स्थापत्य शैली में इस्लामी, फ़ारसी, तुर्की और भारतीय तत्वों का मिश्रण था, जिसके परिणामस्वरूप ताजमहल, लाल किला, फतेहपुर सीकरी और हुमायूँ का मकबरा जैसी प्रतिष्ठित संरचनाएँ बनीं। इन संरचनाओं की विशेषता उनके भव्य पैमाने, जटिल अलंकरण और सामंजस्यपूर्ण अनुपात हैं, जो मुगल काल के सौंदर्य मूल्यों को मूर्त रूप देते हैं।[4]

सामाजिक और धार्मिक नीतियाँ:

मुगल बादशाहों का धर्म के प्रति दृष्टिकोण, खास तौर पर अकबर के शासनकाल के दौरान, व्यवहारवाद और सहिष्णुता की एक महत्वपूर्ण डिग्री द्वारा चिह्नित था। अकबर का दीन-ए-इलाही (ईश्वर का धर्म), हालांकि व्यापक रूप से अपनाया नहीं गया, लेकिन इस्लाम, हिंदू धर्म, जैन धर्म और ईसाई धर्म सहित विभिन्न धर्मों के तत्वों को एक एकीकृत सिद्धांत में संश्लेषित करने का एक प्रयास था। यह पहल अकबर के सामंजस्यपूर्ण और एकीकृत साम्राज्य के दृष्टिकोण को दर्शाती है, हालांकि यह काफी हद तक प्रतीकात्मक था और उसके शासनकाल से अधिक समय तक नहीं चला। मुगल काल में भक्ति और सूफी परंपराओं जैसे विभिन्न समन्वयकारी धार्मिक आंदोलनों का उदय और विकास भी देखा गया, जो व्यक्तिगत भक्ति और ईश्वर के साथ सीधे संबंध पर जोर देते थे, जो कठोर धार्मिक रूढ़िवाद से परे थे। इन आंदोलनों ने विभिन्न धार्मिक समुदायों के बीच एक समृद्ध आध्यात्मिक और सांस्कृतिक आदान-प्रदान में योगदान दिया।

आर्थिक समृद्धि और कृषि उन्नति:

आर्थिक रूप से, मुगल साम्राज्य अपने समय के सबसे समृद्ध साम्राज्यों में से एक था। एक मजबूत प्रशासनिक ढांचे द्वारा समर्थित कृषि अर्थव्यवस्था ने मुगल धन की रीढ़ बनाई। नई फसलों और खेती की तकनीकों की शुरूआत, साथ ही एक व्यापक सिंचाई नेटवर्क के विकास ने कृषि उत्पादकता को बढ़ावा दिया। साम्राज्य की राजस्व प्रणाली, विशेष रूप से अकबर द्वारा शुरू की गई भूमि राजस्व व्यवस्था, किसानों के कल्याण को सुनिश्चित करते हुए राज्य की आय को अधिकतम करने के लिए डिज़ाइन की गई थी। मुगलों के अधीन व्यापार और वाणिज्य फला-फूला, साम्राज्य 16वीं और 17वीं शताब्दियों के वैश्विक व्यापार नेटवर्क में एक प्रमुख केंद्र बन गया। भारतीय वस्त्र, मसाले और अन्य वस्तुओं की अंतर्राष्ट्रीय बाजारों में बहुत मांग थी, जिससे साम्राज्य में काफी धन आया। अरब सागर और बंगाल की खाड़ी के किनारे मुगल बंदरगाहों ने दक्षिण एशिया को मध्य पूर्व, दक्षिण पूर्व एशिया और यूरोप से जोड़ते हुए व्यापक समुद्री व्यापार की सुविधा प्रदान की।

वैज्ञानिक और तकनीकी योगदान:

मुगल साम्राज्य ने विज्ञान और प्रौद्योगिकी में भी महत्वपूर्ण योगदान दिया। हुमायूं और उसके उत्तराधिकारियों द्वारा स्थापित पुस्तकालयों और वेधशालाओं ने खगोल विज्ञान, गणित और चिकित्सा के अध्ययन को बढ़ावा दिया। अरबी और फ़ारसी से स्थानीय भाषाओं में विभिन्न वैज्ञानिक ग्रंथों के अनुवाद ने ज्ञान के प्रसार और विचारों के आदान-प्रदान को सुगम बनाया।[5]

पतन और विरासत:

मुगल साम्राज्य का पतन एक क्रमिक प्रक्रिया थी जो विभिन्न आंतरिक और बाहरी कारकों से प्रभावित थी। बाद के मुगल सम्राटों ने विशाल और विविध साम्राज्य पर नियंत्रण बनाए रखने के लिए संघर्ष किया। क्षेत्रीय शक्तियों के उदय, प्रशासनिक भ्रष्टाचार और आर्थिक कठिनाइयों ने केंद्रीय प्राधिकरण को कमजोर कर दिया। इसके अतिरिक्त, यूरोपीय औपनिवेशिक शक्तियों, विशेष रूप से ब्रिटिशों की बढ़ती उपस्थिति और हस्तक्षेप ने मुगल संप्रभुता को और कमजोर कर दिया। मुगल साम्राज्य का पतन 1857 के विद्रोह में परिणत हुआ, जिसके बाद ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कंपनी ने औपचारिक रूप से मुगल शासन को समाप्त कर दिया और भारत पर प्रत्यक्ष औपनिवेशिक नियंत्रण स्थापित किया। अपने पतन के बावजूद, मुगल साम्राज्य ने दक्षिण एशिया पर एक अमिट छाप छोड़ी। कला, वास्तुकला, संस्कृति और प्रशासन में इसके योगदान ने इस क्षेत्र को प्रभावित करना जारी रखा है, जो इसकी ऐतिहासिक और सांस्कृतिक पहचान को आकार देता है।[6]

सांस्कृतिक संश्लेषण की विरासत

मुगल साम्राज्य की स्थायी विरासतों में से एक अद्वितीय सांस्कृतिक संश्लेषण को बढ़ावा देने में इसकी भूमिका है। मुगल, जो मूल रूप से मध्य एशियाई तुर्क-मंगोल वंश के थे और जिन्होंने इस्लाम को अपनाया, भारतीय उपमहाद्वीप के विविध सांस्कृतिक परिवेश के साथ सहज रूप से एकीकृत हो गए। यह सांस्कृतिक संलयन जीवन के विभिन्न पहलुओं, वास्तुकला और भोजन से लेकर संगीत और साहित्य तक में स्पष्ट है। मुगल वास्तुकला, विशेष रूप से, इस संश्लेषण के शिखर का प्रतिनिधित्व करती है। इस्लामी, फ़ारसी और भारतीय स्थापत्य शैलियों के मिश्रण के परिणामस्वरूप जटिल नक्काशी, नाजुक संगमरमर की जड़ाई, राजसी गुंबद और सममित उद्यानों की विशेषता वाली संरचनाएँ बनीं। ताजमहल, जिसे सम्राट शाहजहाँ ने अपनी प्यारी पत्नी मुमताज महल के मकबरे के रूप में बनवाया था, मुगल स्थापत्य वैभव का सबसे प्रतिष्ठित उदाहरण बना हुआ है और इसे यूनेस्को की विश्व धरोहर स्थल के रूप में मान्यता प्राप्त है।[7]

कला और साहित्य

मुगल काल दक्षिण एशिया में कला और साहित्य के लिए भी स्वर्णिम युग था। मुगल सम्राट और रईस कला के उत्साही संरक्षक थे, जो प्रतिभाशाली कारीगरों, कवियों और विद्वानों को अपने दरबार में आकर्षित करते थे। मुगल लघु चित्रकला, एक विशिष्ट कला रूप जो अपने विस्तृत ब्रशवर्क और जीवंत रंगों की विशेषता है, इस अवधि के दौरान फली-फूली। इन लघु चित्रों में दरबार के दृश्य, शिकार अभियान, चित्र और धार्मिक विषयों सहित कई तरह के विषयों को दर्शाया गया है। मुगलों की दरबारी भाषा फ़ारसी में साहित्य अकबर और जहाँगीर जैसे शासकों के संरक्षण में फला-फूला। इस युग के दौरान इतिहास, कविता और दर्शन की कई उल्लेखनीय रचनाएँ लिखी गईं, जिन्होंने मुगल समाज की बौद्धिक समृद्धि में योगदान दिया। संस्कृत ग्रंथों का फ़ारसी में अनुवाद भी विभिन्न सांस्कृतिक परंपराओं के बीच ज्ञान के आदान-प्रदान को सुगम बनाता है।

प्रशासनिक नवाचार

मुगल साम्राज्य को महत्वपूर्ण प्रशासनिक नवाचारों को शुरू करने का श्रेय दिया जाता है, जिसका दक्षिण एशिया में शासन पर स्थायी प्रभाव पड़ा। अकबर, जो अपने प्रशासनिक सुधारों के लिए जाने जाते हैं, ने एक केंद्रीकृत नौकरशाही की स्थापना की और सावधानीपूर्वक भूमि सर्वेक्षण और मूल्यांकन के आधार पर राजस्व संग्रह की एक प्रणाली लागू की। इस प्रणाली को "ज़ब्त" प्रणाली के रूप में जाना जाता है, जिसका उद्देश्य साम्राज्य की कृषि अर्थव्यवस्था के निष्पक्ष कराधान और कुशल प्रशासन को सुनिश्चित करना था। मुगल प्रशासनिक ढांचे में विभिन्न प्रशासनिक प्रभाग

(सूबा) शामिल थे, जिनमें से प्रत्येक का नेतृत्व सम्राट द्वारा नियुक्त एक गवर्नर (सूबादार) करता था। इस विकेंद्रीकृत प्रशासनिक ढांचे ने पश्चिम में काबुल से लेकर पूर्व में बंगाल तक विशाल क्षेत्रों में कुशल शासन की अनुमति दी।

आर्थिक समृद्धि और व्यापार

आर्थिक रूप से, मुगल साम्राज्य आधुनिक काल के आरंभ में व्यापार और वाणिज्य का एक प्रमुख केंद्र था। भारतीय वस्त्र, मसाले, कीमती पत्थर और अन्य वस्तुओं का अंतर्राष्ट्रीय बाजारों में बहुत अधिक मूल्य था, जो यूरोप, मध्य पूर्व और दक्षिण पूर्व एशिया के व्यापारियों को आकर्षित करते थे। [8] सूरत, कालीकट और ढाका जैसे मुगल बंदरगाहों ने हिंद महासागर में समुद्री व्यापार और सांस्कृतिक आदान-प्रदान को सुविधाजनक बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। साम्राज्य की आर्थिक समृद्धि ने दिल्ली, आगरा, लाहौर और फतेहपुर सीकरी जैसे जीवंत शहरी केंद्रों के विकास का भी समर्थन किया, जो व्यापार, संस्कृति और शिल्प कौशल के हलचल भरे केंद्र बन गए। कारीगर और शिल्पकार शाही संरक्षण में फले-फूले, उत्तम वस्त्र, धातु के काम, आभूषण और कालीन का उत्पादन किया, जो साम्राज्य के भीतर और विदेशों में बेशकीमती थे।

पतन और परिवर्तन

मुगल साम्राज्य का पतन 17वीं शताब्दी के अंत में शुरू हुआ, जो राजनीतिक अस्थिरता, उत्तराधिकार विवाद और आर्थिक चुनौतियों से चिह्नित था। क्षेत्रीय शक्तियों द्वारा अपनी स्वतंत्रता का दावा करने के कारण साम्राज्य अर्ध-स्वायत्त राज्यों में विखंडित हो गया। 18वीं शताब्दी में मराठों, सिखों और विभिन्न नवाबों (राज्यपालों) जैसे उत्तराधिकारी राज्यों का उदय हुआ, जिन्होंने पूर्ववर्ती मुगल साम्राज्य के विभिन्न क्षेत्रों को नियंत्रित किया। 19वीं शताब्दी की शुरुआत तक, ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कंपनी भारत में प्रमुख शक्ति के रूप में उभरी थी, जिसने धीरे-धीरे मुगल क्षेत्रों पर कब्जा कर लिया और प्रशासन पर सीधा नियंत्रण स्थापित कर लिया। 1857 के विद्रोह, जिसे अक्सर सिपाही विद्रोह या भारतीय स्वतंत्रता का पहला युद्ध कहा जाता है, ने मुगल सत्ता को अंतिम रूप से उखाड़ फेंका और ब्रिटिश औपनिवेशिक शासन की शुरुआत की। निरंतर प्रभाव और विरासत: औपनिवेशिक शक्तियों द्वारा राजनीतिक गिरावट और विस्थापन के बावजूद, मुगल साम्राज्य की विरासत दक्षिण एशिया में गूंजती रही। मुगल स्थापत्य शैली और रूपांकन अभी भी क्षेत्र के स्मारकों, महलों और मस्जिदों में दिखाई देते हैं। उर्दू भाषा, जो मुगल काल के दौरान फारसी, अरबी और स्थानीय बोलियों के मिश्रण के रूप में विकसित हुई, भारत और पाकिस्तान में एक महत्वपूर्ण सांस्कृतिक और साहित्यिक भाषा बनी हुई है। मुगल काल ने दक्षिण एशियाई व्यंजनों पर भी गहरी छाप छोड़ी, जिसमें बिरयानी, कबाब और मुगलई करी जैसे व्यंजन मध्य एशियाई, फारसी और भारतीय पाक परंपराओं के मिश्रण को दर्शाते हैं। कालीन बुनाई, मिट्टी के बर्तन और कढ़ाई जैसे पारंपरिक शिल्प मुगल कलात्मक तकनीकों और डिजाइनों के प्रभाव को जारी रखते हैं।

दक्षिण एशिया में इस्लाम और मुगल साम्राज्य: 1526-1857

दक्षिण एशिया के बारे में सोचते समय ज़्यादातर लोग किलों, लघु चित्रों, मकबरों, उद्यानों और ताजमहल जैसी प्रतिष्ठित इमारतों के बारे में भी सोचते हैं। ये सभी मुगल साम्राज्य (1526-1857) की भव्यता के उदाहरण हैं, जिसमें एक विशिष्ट कुलीन संस्कृति तैयार की गई थी और कला, संगीत, कविता, शिष्टाचार, समारोहों और शाही दरबार की वस्तुओं में अपार उपलब्धियों की विशेषता थी। मुगल साम्राज्य विश्व इतिहास में प्रारंभिक आधुनिक काल के सबसे बड़े केंद्रीकृत राज्यों में से एक था। सत्रहवीं शताब्दी के अंत तक, मुगल सम्राट ने 100-150 मिलियन की आबादी पर शासन किया

और भारतीय उपमहाद्वीप के लगभग 3.2 मिलियन वर्ग किलोमीटर (लगभग 1.23 मिलियन वर्ग मील) पर कब्ज़ा कर लिया।1 इस समय के दौरान, मुगल क्षेत्र काबुल, कश्मीर, दिल्ली, बंगाल, ओडिशा, गुजरात, राजस्थान और दक्कन के कुछ हिस्सों तक फैला हुआ था। इसमें वे क्षेत्र शामिल थे जो आज भारत, पाकिस्तान, बांग्लादेश और यहाँ तक कि अफ़गानिस्तान में स्थित हैं। जिन शताब्दियों में मुगल साम्राज्य फला-फूला, वह विश्व इतिहास का एक गतिशील समय था। इतिहासकार जॉन रिचर्ड्स ने बताया है कि इस अवधि में समुद्री मार्गों के माध्यम से पूरी दुनिया को जोड़ना, कपड़ा उद्योग का विस्तार, जनसंख्या में वृद्धि और तकनीकी प्रसार शामिल थे। मुगलों से पहले के राजवंशों ने विभिन्न धर्मों को अपनाया, प्रशासन और जीवन के अन्य क्षेत्रों में महत्वपूर्ण मिसाल कायम की जिससे एक बड़े साम्राज्य का फलना-फूलना संभव हुआ।[9] यह ध्यान रखना महत्वपूर्ण है कि भारत में मुगल वंश की स्थापना से पहले, मिशनरियों, व्यापारियों और योद्धाओं द्वारा पेश किया गया इस्लाम लगभग एक हज़ार वर्षों से दक्षिण एशिया में मौजूद था। इस्लाम पहली बार सातवीं शताब्दी में अरब व्यापारियों के साथ दक्षिण एशिया में आया, जो पहली बार दक्षिणी भारत और श्रीलंका के मालाबार सागर तट पर दिखाई दिए। उन्हें गैर-मुस्लिम राजाओं द्वारा संरक्षण दिया गया था और उन्होंने व्यापार और संचलन के नेटवर्क के माध्यम से भारत को दक्षिण-पश्चिम एशिया और उससे आगे जोड़ने वाली अर्थव्यवस्था में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई थी। दमिश्क में उमय्यद खिलाफत के काल (आठवीं शताब्दी ई.) के दौरान, अरबी भाषी मुस्लिम व्यापारियों ने सिंध (अब पाकिस्तान का एक प्रांत) में प्रवेश किया। मुगल-पूर्व और मुगल काल में दक्षिण एशिया में अंतर्जातीय विवाह और धर्मांतरण के माध्यम से मुस्लिम आबादी में वृद्धि हुई। उम्मीद है कि पाठक मुगल साम्राज्य के दक्षिण एशिया के संपर्कों के विस्तार की कल्पना कर सकते हैं, खासकर मध्य एशिया, पूर्वी एशिया, दक्षिण-पश्चिम एशिया और अरब प्रायद्वीप के साथ। इस्लामी परंपराओं में निहित होने के बावजूद, मुगल शासकों ने भारतीय आदर्शों, प्रशासनिक संरचनाओं और जीवन जीने के तरीकों से प्रेरणा ली। मुगल साम्राज्य के संस्थापक बाबर (शासनकाल 1483-1530) से लेकर औरंगजेब (शासनकाल 1658-1707) तक, महान मुगल सम्राटों में से अंतिम, स्थानीय लोगों के बीच इस्लाम की क्रमिक स्वीकृति और इस्लाम से प्रेरित मुगल कला और वास्तुकला सहित मुगल राज्य और इसकी प्रमुख संस्थाएँ। सभी मुगल सम्राटों में सबसे प्रसिद्ध, अकबर महान (शासनकाल 1556-1605) पर भी आगे प्रकाश डाला गया है।[10]

इस्लामी आदर्श और मुगल साम्राज्य की प्रमुख विशेषताएं

1526 में, ज़हीर-उद-दीन मुहम्मद बाबर ने भारत में मुग़ल शासन की स्थापना की जो 1857 तक चला, जब अंतिम मुग़ल सम्राट ने ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कंपनी की सेनाओं के सामने आत्मसमर्पण कर दिया। पैतृक रूप से, बाबर महान सैन्य नेता तैमूर (तैमूर लंग, आर.1370-1405) का वंशज और उत्तराधिकारी था और मातृ रूप से, मंगोल विश्व विजेता चंगेज खान (आर.1206-1227) का वंशज था।[11] बाबर समरकंद (आज के उज्बेकिस्तान में) में अपनी खोई हुई विरासत के मुआवजे के रूप में भारत के लिए फ़ारसी नाम हिंदुस्तान लौट आया। हालाँकि उसने केवल 1526 तक शासन किया, बाबर ने पानीपत की पहली लड़ाई में इब्राहिम लोधी को हराया, दिल्ली पर विजय प्राप्त की और अपने बेटे हुमायूँ (आर.1530-1540) को आगरा पर कब्ज़ा करने के लिए भेजा, जो इस्लाम को मानने वाले उत्तर भारतीय राजवंश की शाही राजधानी थी। 1527 में, बाबर ने आगरा के पास खानवा में राणा सांगा को हराया और उत्तरी भारत के अधिकांश हिस्से पर कब्ज़ा कर लिया। 1529 में, बाबर ने अफ़गानों को हराकर उत्तर-पूर्वी भारत में बंगाल और पूर्वी भारत के अधिकांश हिस्सों में अपना शासन बढ़ाया। बाबर अपनी विशाल सेना के लिए जाना जाता था, जिसमें तोपें, चलने योग्य तोपखाने और घुड़सवार सेना की रणनीति थी। बाद में, उनके बेटे हुमायूँ (1508-1556) ने भारत के पश्चिमी तट पर गुजरात और अन्य भूमि और पश्चिमी भारत में स्थित किलेबंद मांडू पर कब्ज़ा कर लिया। एक दशक तक शासन करने के बाद, हुमायूँ को अफ़गान मुस्लिम सूर वंश के शासकों (1540-1556) ने हराया और फारस में निर्वासन के बाद, 1555 में सूर पर एक बड़ी जीत हासिल की और अपने सिंहासन को वापस पा लिया, केवल एक साल

पहले एक घातक सीढ़ी गिरने से शासन करने के लिए। सूर ने सड़कों के बुनियादी ढांचे को बढ़ाया और एक नौकरशाही और सैन्य शासन की नींव रखी, जिसे हुमायूँ के बेटे, अकबर महान ने आगे बढ़ाया, जिनके पास मुगल वंश को एक उपमहाद्वीपीय साम्राज्य में बदलने के लिए प्रशासनिक कौशल और रणनीतिक दृष्टि थी। फ़ारसी मुगल शासकों की दरबारी भाषा थी। फ़ारसी ने मुगल शासकों को मध्य और दक्षिण-पश्चिम एशिया के साथ अपने नेटवर्क को पोषित करने और साहित्य और धर्म में अनूठी परंपराओं को विकसित करने में मदद की। बैंकरों, सैन्य कर्मियों, व्यापारियों, सांस्कृतिक विशेषज्ञों और धार्मिक नेताओं सहित कई तरह के सक्षम लोग मुगल व्यवस्था का हिस्सा थे।[12] ये उल्लेखनीय लोग न केवल अपने व्यवसायों और विशेषज्ञता के क्षेत्रों में विविध थे, बल्कि उनकी जातीयता, भाषाई परंपराओं और धार्मिक संबद्धताओं के मामले में भी विविधता थी। सोलहवीं शताब्दी के उत्तरार्ध में मुगल शाही कुलीनता में अफ़गान, तुर्क, मध्य एशिया के उज़बेक, फ़ारसी, अरब, हिंदू राजपूत (एक योद्धा जाति), ब्राह्मण (एक पुजारी जाति), मराठा (पश्चिमी भारत की एक जाति) और कुछ स्थानीय रूप से जन्मे मुसलमान शामिल थे। मुस्लिम शासकों ने मौजूदा संस्थाओं, भाषा, कानून, सिंचाई और खेती के तरीकों, साहित्य, सांस्कृतिक परंपराओं और धार्मिक प्रथाओं में कई बदलाव किए। एक उदाहरण का हवाला देते हुए, अकबर ने वज़ीर (कई इस्लामी राजनीति में एक शक्तिशाली मंत्री) को बदल दिया और सेना, वित्त और शाही घराने के रखरखाव के लिए अपने सभी प्रांतों में चार केंद्रीय मंत्रालयों को शक्तियाँ वितरित कीं। 1571 में, उन्होंने मनसबदारी (पद-धारण) प्रणाली भी शुरू की और कुलीनों को नागरिक और सैन्य कर्तव्यों के अनुसार रैंकिंग दी गई। स्थानीय ज़मींदार और अपने-अपने क्षेत्रों के सम्मानित व्यक्ति - मुस्लिम और गैर-मुस्लिम दोनों - जिनके पास बहुत शक्तिशाली अभिजात वर्ग था, उन्हें मुग़ल काल के दौरान राजस्व-संग्रह प्रणाली में शामिल किया गया था।[13]

निष्कर्ष

निष्कर्ष में, मुगल साम्राज्य की विरासत बहुआयामी और स्थायी है, जिसमें कलात्मक उपलब्धियाँ, प्रशासनिक नवाचार, आर्थिक समृद्धि और सांस्कृतिक संश्लेषण शामिल हैं। दक्षिण एशियाई इतिहास और पहचान पर इसका प्रभाव गहरा है, जो आज भी इस क्षेत्र की सांस्कृतिक विरासत और सामूहिक स्मृति को आकार दे रहा है।अंत में, मुगल साम्राज्य केवल एक राजनीतिक इकाई नहीं था, बल्कि एक जटिल और गतिशील शक्ति थी जिसने दक्षिण एशिया के इतिहास और संस्कृति को गहन तरीकों से आकार दिया। इसकी विरासत क्षेत्र की वास्तुकला, साहित्य, कला और सामाजिक प्रथाओं में परिलक्षित होती है, जो साम्राज्य के अस्तित्व में आने के बाद भी लंबे समय तक बनी रही। मुगल युग दक्षिण एशिया की कहानी में एक महत्वपूर्ण अध्याय बना हुआ है, जो सांस्कृतिक संश्लेषण, नवाचार और विरासत की एक समृद्ध ताने-बाने को दर्शाता है।

ग्रंथ सूची

[1] बेली, सुसान. अठारहवीं शताब्दी से आधुनिक युग तक भारत में जाति, समाज और राजनीति . कैम्ब्रिज: कैम्ब्रिज यूनिवर्सिटी प्रेस, 2001.

[2] बेगली, वेन ई. "ताजमहल का मिथक और इसके प्रतीकात्मक अर्थ का एक नया सिद्धांत।" द आर्ट बुलेटिन 61, नंबर 1 (1979): 7–37.

[3] चंद्रा, सतीश. मध्यकालीन भारत: दिल्ली सल्तनत से मुगलों तक, भाग 2, 1206–1526 . (नई दिल्ली, भारत: हरआनंद प्रकाशन, 1997).

[4] औरंगज़ेब के शासनकाल के अंतिम भाग में उसकी धार्मिक नीति पर कुछ विचार। भारतीय इतिहास कांग्रेस की कार्यवाही, खंड 1: 369–381, 1986।

[5] ईटन, रिचर्ड एम. इस्लाम और भारतीय इतिहास पर निबंध । न्यूयॉर्क: ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, 2002।
[6] मध्यकालीन भारत में मंदिर अपवित्रीकरण और मुस्लिम राज्य . भारत: होप इंडिया पब्लिकेशन्स, 2004.
[7] फ़ारसी युग में भारत: 1000–1765 . लंदन: पेंगुइन यूके, 2019.
[8] फिशर, माइकल. मुगल साम्राज्य का संक्षिप्त इतिहास . लंदन: ब्लूम्सबरी प्रकाशन, 2015.
[9] हार्डी, पीटर. द मुस्लिम्स ऑफ़ ब्रिटिश इंडिया . लंदन: कैम्ब्रिज यूनिवर्सिटी प्रेस, 1972.
[10] हॉलैंड, सी.पी. अकबर और मुगल राज्य: हिंदुस्तान में वैधीकरण की खोज। 2005, https://tinyurl.com/5n7pe3e7
[11] कोच, एब्बा. मुगल वास्तुकला: इसके इतिहास और विकास की रूपरेखा (1526-1858) . म्यूनिख, जर्मनी: प्रेस्टेल पब्लिशिंग, 1991.
[12] मेटकाफ, बारबरा डी., और थॉमस आर. मेटकाफ। आधुनिक भारत का संक्षिप्त इतिहास , दूसरा संस्करण। कैम्ब्रिज: कैम्ब्रिज यूनिवर्सिटी प्रेस, 2006।
[13] इस्लाम इन साउथ एशिया इन प्रैक्टिस . प्रिंसटन: प्रिंसटन यूनिवर्सिटी प्रेस, 2009.